कबीर की साखियाँ

प्र.१) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

अ) जाति न पुछो साधु की, पुछ लीजिए ज्ञान।

आ) कह कबीर नहि उलटिए, वही एक की एक।

इ) माला तो कर में फिरै, जीभि फिरै मुख माँहि।

ई) उडि पडै जब आँखि में, खरी दुहेली होई।

उ) जग में बैरी कोई नही, जो मन सीतल होय।

प्र.२) दिए गए शब्द अपनी भाषा (स्थानिक) में लिखें।

अ) साधु - साधा — रहन - रहने

आ) तरवार - तलवार — आवत - आना

इ) जिभि - जीभ — दिसि -

ई) आँखि - आँखे — बैरी -

उ) सीतल - शीतल — आरि -

प्र.३) एक एक वाक्य में उत्तर लिखें।

अ) हमे किसकी जाति पर ध्यान नहीं देना चाहिए?

जो सज्जन व्यक्ति होते है, जो साधे इन्सान होते हैं उनकी जाती नही पुछना चाहिए।

आ) हमे सज्जन इन्सान से क्या पुछना चाहिए?

हमें सज्जन इन्सान से ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

इ) तलवार की किंमत कब की जाती है?

तलवार का किंमत म्यान में रहने से नही म्यान के बाहर आने से उसकी धार समझने से होती है।

ई) किसी के अपशब्दों का जवाब हमें कैसे देना है?

किसी के अपशब्दों का जवाब हमे अपशब्दों से नहीं बल्कि प्यार से देना है।

उ) अपशब्दों का जवाब प्यार से देंगे तो क्या होगा?

अपशब्दों का जवाब प्यार से देने से अपशब्द घटते - घटते कम

हो जाएँगे

ऊ) अगर प्रभु को पाना है, तो हमें क्या करना होगा?
अगर प्रभु को पाना है तो हमें एकाग्र होकर उनकी भक्ती करनी होगी।

ऐ) प्रभु का नाम लेना कब बेकार हो जाएँगा?
अगर हमारा मन भक्ति में नहीं लगता और हम माला जपते है या फिर मुख से प्रभु का नाम लेते है तो यह बेकार हो जाएँगा।

ऐ) हमे किसका निरादर नहीं करना है?
हमें किसीको भी छोटा समझकर उसका निरादर नही करना है।

ओ) अगर आँख में तिनका चला जाएँ तो क्या होगा?
अगर आँख में तिनका चला जाएँ तो बहुत पीड़ा होगी।

ओ) जब मनुष्य का मन शांत होगा तो क्या हो सकता है?
जब मनुष्य का मन शांत होगा तब उसका दुनिया में कोई शत्रु नही रहेगा।

औ) मनुष्य दयालु कब बनेगा?
जब मनुष्य अपना स्वार्थ, क्रोध जैसी भावनाओं का त्याग कर देगा तो वो दयालु और महान बन सकेगा।

प्र.३) मुकांत शब्द लिखें।
अ) ज्ञान - ध्यान
आ) मोहि - नाहिं
इ) अनेक - एक
ई) होय - कोय

प्र.४) दिए गए वाक्य के अर्थ लिखें।
अ) मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान।
तलवार कि किंमत उसकी धार से होती है, अगर तलवार म्यान में पड़ी रहेगी, हम उसका उपयोग नहीं करेंगे तो उस तलवार की उसकी धार की कोई किंमत नहीं होगी।

४) आवत गारी एक है, उलट होई अनेक
अगर हम किसीके अपशब्द का जवाब अपशब्द से देते है तो दुश्मनी, शत्रुता बढ़ जाएगी, अपशब्दों की संख्या बढ़ेगी।

५) मनुवाँ तो दहुँ दिसी फिरै, यह तो सुमिरन नाहि।
अगर हमें ईश्वर को प्रसन्न करना है, उनकी कृपा चाहिए तो हमे उनकी भक्ति करनी चाहिए।

६) कबीर घास न नींदिए, जो पाँऊ तलि होइ।
कबीर जी कहते है की, कभी किसिका निरादर नहीं करना चाहिए। चाहे सामनेवाला छोटा हो या फिर बड़ा सबका आदर करना चाहिए।

७) या आपा को डारि दे, दया करैं सब कोय
अगर हमें दयालु बनना है तो सब क्रोध, मोह की भावनाए त्याग देनी चाहिए।